व्यंग्य

देशहित की खुराक और देश का युवा

देवेन्द्र भाले

भारत "युवाओं" का देश है। एक सर्वे के अनुसार भारत की आबादी की औसत आयु 29 वर्ष है अर्थात दुनिया का सब से युवा देश। ये बात अलग है कि इस युवा देश के लगभग सभी "नेता" 70 पार है। लेकिन युवा को इस की परवाह नही युवा अपने रास्ते खुद बनाता है। युवा ने देश चलाने के लिए अपनी "मनपसंद सरकार" निर्वाचित कर ली है।

अब चूकिं युवा ने सरकार बनाई है इसीलिए सरकार को भी युवा की बहुत परवाह है। सरकार नही चाहती युवा मेहनत कर के दर-2 की ठोकर खाये। उस को सुबह जल्दी उठ कर काम पर जाना पड़े और सारे दिन माथा पच्ची करनी पड़े। इसीलिए सरकार ने सब से पहले "रोजगार" के सारे अवसर खत्म कर दिए। रोजगार है ही नही तो युवा के घर वाले उस को जबर्दस्ती कहीं भेज भी नही सकते, युवा अब घर पर आराम करता है।

लेकिन अब एक और समस्या खड़ी हो गई। भगवान के इंसान को बनाते समय एक manufacturing defect रह गया। इंसान ज्यादा देर खाली नही बैठ सकता, उस को करने के लिए कुछ न कुछ चाहिए। युवा को भी खाली बैठे-2 दिक्कत आने लग गई। अब सरकार चूंकि युवाओं के कल्याण के लिए बनाई गई थी इसीलिए सरकार ने अपने "परम मित्र" की मदद से युवा को रोज का 1 जीबी डाटा मुफ्त में देना शुरू कर दिया, युवा खुश हो गया। अब युवा सोशल मीडिया पर पहुंच गया। वहां जा कर युवा को पता चला कि उस का "धर्म" और "जाति" कितने बड़े सकंट में है। भगवान का लाख-2 शुक्र है कि वो उस के "धर्म और जाति" की रक्षा के लिए सही समय पर "सोशल मीडिया" पर पहुंच गया नही तो ये लोग खत्म ही कर देते सब कुछ। अब युवा को रंगों की समझ भी हो गई। उस को, उस के जैसे ही युवाओं ने उस का एक विशेष रंग दे दिया। किसी का नीला, किसी का हरा, किसी का लाल तो किसी का भगवा। युवा को एहसास हो गया कि सिर्फ उस के रंग वाले लोग ही उस की जाति के और उसके धर्म के परम हितेषी है, बाकी सब उस के दुश्मन है। युवा को अब अपना रंग बचाने का अति महत्वपूर्ण काम मिल चुका है। युवा सुबह उठता है और अपने जैसे बाकि युवाओं के साथ मिलकर अपने धर्म की रक्षा में जुट जाता है। उस का काम है अपने जैसे बाकि युवाओं को उसके रंग की पहचान कराना, उनको अपनी पहचान करवाना। उनको, उन के गौरवशाली इतिहास से परिचित करवाना, उनको उन पर हुए जुल्म का इल्म करवाना।

"हिन्दू युवाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे सभी मुस्लिम देश का बुरा सोचते है? कैसे सदियों से उन्होंने हिन्दू धर्म को हानि पहुंचाई है? कैसे देश के हित मे उन सब को बाहर निकालना जरूरी है?

"मुस्लिम युवाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे उन्होंने सदियों तक देश पर हुकूमत की है? कैसे हिन्दू उन पर अत्याचार कर रहे है? इस्लाम के हित मे "गजवा ए हिन्द" होना कितना जरूरी है? "सवर्ण युवाओं" को समझाया जा रहा है कि कैसे "दलित", आरक्षण ले कर बिना प्रतिभा ऊंची-2 नौकरी पा रहे है ? और कैसे उन की वजह से उन को प्रतिभा होते हुए भी

नौकरी नही मिल पा रही है।

"दलितों" को इतिहास बताया जा रहा है कि कैसे उनका सदियों से शोषण किया गया? कैसे वो "मूलनिवासी" है ? और "सवर्ण", बाहर से आये हुए है और उन सब के दुश्मन है।

"महिलाओं" को बताया जा रहा है कि कैसे शुरुआत से ही पुरुषों ने उन का शोषण किया है ? कैसे सभी पुरुष गंदी सोच वाले, दुर्बुद्धि और परपीड़क होते है ? और महिलाएं कभी भी गलत नही होती है। "नारीवाद" ही महिलाओ की उन्नति का एकमात्र रास्ता है।

अब युवा के पास अपना एक "वाद" है, जिसकी रक्षा उसे करनी है। उस की विचारधारा को ना मानने वाले सभी उस के दुश्मन है। युवा ने देखा कि ऐसे संकटपूर्ण समय मे भी जब उस की "जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र" पर इतना बड़ा संकट आया हुआ है। तब भी कुछ बेकार लोग "शिक्षा, चिकित्सा और रोजगार" जैसी महत्वहीन बाते कर रहे है। युवा समझ गया है कि ये लोग भी देश के दुश्मन ही है।

अब युवा सुबह से शाम तक अपने धर्म की रक्षा में लगा रहता है। युवा "इतिहासज्ञ" है, युवा को चाहे अपने "पिता के दादा" का नाम नही पता हो। लेकिन युवा को पता है कि 800 साल पहले उस के वर्ग के साथ किन लोगों ने गलत किया जिसका बदला उसे लेना है।

युवा चाहे अपने "पड़ोसी का नाम" भी नही जानता हो लेकिन युवा "विदेश नीति" में विशेषज्ञों को भी गलत साबित कर सकता है। युवा को चाहे "सौंफ और जीरे" में फर्क नही पता हो लेकिन युवा "कृषि विशेषज्ञ" है। युवा से चाहे बगल में बैठी हुई "मक्खी" भी नही डरती हो लेकिन युवा सोशल मीडिया पर "चीन और पाकिस्तान" की अक्ल ठिकाने लगाने की बाते करता है। युवा के पिता चाहे खून-पसीने से मेहनत करके जैसे-तैसे उस का पेट पाल रहे हो लेकिन युवा "पेट्रोल में 15 रुपये बढ़ने के लिए पीएम बदल दे क्या? शेर पाला है थोड़ा महंगा तो पड़ेगा ही" वाले पोस्ट शेयर कर रहा है।

कुल-मिला कर युवाओं की सरकार ने युवा के लिए स्वर्ग का निर्माण कर दिया है। सारे दिन कोई काम के लिए नही कहता है। अपनी कुंठाओ को सोशल मीडिया पर किसी को भी गाली देकर निकाल सकता है। साथ ही जाति/धर्म की रक्षा हो रही है वो अलग और क्या चाहिए जीवन में?

ईश्वर और खुदा के नाम

हे ईश्वरो ! हे खुदाओ !
देखो !
हमारी तरफ देखो !

हमारे कंकालों को देखो
पानी नहीं बचा है शरीर में
ना पेट में कोई दाना
हस्पताल में दवा नहीं
स्कूलों में शिक्षा नहीं
करने को काम नहीं

आशियाने उजड़ रहे हैं
काफिले लुट रहे हैं
घिर आए हैं
जंगल और खंडहर

विश्वास नहीं बचा है किसी को किसी पर
युद्ध लड़ा जा रहा है
घर के अंदर और घर के बाहर
सब देशों के इर्दगिर्द
कोई भी नहीं बचा है साबूत कहीं पर

अब और क्या चाहिए !

हे ईश्वर! हे खुदा !
बताईए!
अब और क्या चाहिए !

-जयपाल

शिक्षा को मारीचिका बना दिया

दिल्ली विश्वविद्यालय के असिस्टेंट प्रोफेसर दीपक भास्कर लिखते हैं- आज दुखी हूं, कॉलेज में काम खत्म होने के बाद भी स्टाफ रूम में बैठा रहा, कदम उठ ही नहीं रहे थे।

दो बच्चों ने आज ही एड्मिशन लिया और जब उन्होंने फीस लगभग 16000 सुना और होस्टल फीस लगभग 1,20,000 सुनकर एड्मिशन कैंसिल करने को कहा।

पिता ने लगभग पैर पकड़ते हुए कहा कि सर, मजदूर है राजस्थान से, हमने सोचा कि सरकारी कॉलेज है तो फीस कम होगी, होस्टल की सुविधा होगी सस्ते मे, इसलिए आ गए थे।

मैंने रोकने की कोशिश भी की लेकिन अंत में एडमिशन कैंसिल ही करा लिया।

बैठकर, ये सोच रहा था कि एक तरफ जहां लोग सस्ती शिक्षा चाह रहे हैं वहीं दूसरी तरफ सरकार कह रही है कि 30 प्रतिशत खुद जेनेरेट कीजिये।

ऑटोनोमी के नाम पर निजीकरण हो रहा है।

सोचिये, दिल्ली विश्विद्यालय के चारो तरफ प्राइवेट यूनिवर्सिटी का जाल बिछ रहा है।

जो लोग 15,000 की फीस नही दे पा रहे वो लाखों की फीस प्राइवेट यूनिवर्सिटी को कहां से देंगे ?

लगभग ऐसे कई बच्चे डीयू के तमाम कॉलेजों में एड्मिशन कैंसिल कराते होंगे।

इन दो बच्चों में एक बच्चा हिन्दू और दूसरा मुसलमान था, दोनों ओबीसी।

ये उस देश मे हो रहा है जहां के प्रधानमंत्री खुद को ओबीसी क्लेम कर रहे हैं, ये उस देश में हो रहा है जिसके प्रधानमंत्री स्वयं चाय बेचने की बात करते हैं।

अरे भाई आप गरीब है तो इनके लिए ही कुछ कर देते।

कॉलेज में कई तरह की स्कालरशिप तो हैं लेकिन फीस भरने के लिए काफी

नही, होस्टल फीस भरने लायक तो कतई नही।

पीजी में रेंट पर रहना तो अच्छी आर्थिक व्यवस्था वाले लोगों के भी वश का नही।

शिक्षक एक कार्पस फण्ड बनाने की बात कर रहे हैं ताकि ऐसे बच्चों की मदद किया जा सके। लेकिन इससे एक दो लोगों की मदद तो हो सकती है लेकिन सर्व कल्याण तो सरकार की नीतियों से ही होगा। लेकिन सरकार को खुद बचा रहना है और बाकी मंत्रालयों को उनको बचाये रखना है। तो गरीब मजदूर क्या करें।

लेकिन मैं दुखी हूं कालेज का 95 प्रतिशत का कटऑफ और बच्चे के पास 95 प्रतिशत नम्बर हैं।

लेकिन इसके बावजूद भी गरीब बच्चे क्या करेंगे ?

गांव गोद लिए जा रहे हैं और लोग गरीब हुए जा रहे हैं।

बेटी बचाओ बेटी बढ़ाओ का नारा कितना फेक लगता है।

गर्ल्स कॉलेज बेटियों को उच्च शिक्षा देने के लिए ही बना था लेकिन आज एक गरीब की बेटी उसी से महरूम हो गई।

विश्विद्यालय अपने यूनिवर्सिटी होने का चरित्र खो रही है।

बाकी फर्स्ट कट ऑफ का एड्मिशन खत्म हो गया है। दूसरे और तमाम कटऑफ में भी शायद ऐसे कितने बच्चे आएंगे और वापस चले जायेंगे।

ये सालों से हो रहा होगा लेकिन जब भारत बदल रहा था तो शायद ये भी बदल जाता।

बाकी अब कुछ नहीं। शिक्षा मंत्रालय रोज एक नया फरमान ला रहा है।

उस पिता ने कहा कि सुना था कि जेएनयू की फीस कम है उसी से सोच लिए थे कि यहां भी कम होगी।

अब आप समझे जेएनयू को खत्म क्यों किया जा रहा है।

सत्यमेव जयते।

-शीतल पी सिंह